Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

मुग़ल चारबाग़ शैली

अंकुर वर्मा
शोध छात्र,
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

मानव की विकास यात्रा पर गौर किया जाए तो इसमें बगीचों का योगदान विशेष रूप से उभर कर सामने आता है। यदि बाइबिल की मानी जाए तो आदम और ईवा भी बगीचे में ही थे जब उन्होंने एक भूल से इस सृष्टि का सृजन कर डाला। लगभग सभी धार्मिक साहित्यों में किसी न किसी रूप में बागों की कल्पना को स्थान दिया गया है। धार्मिक साहित्य से इतर राजनैतिक अतीत पर नज़र डालें तो भी बगीचों की महत्ता नज़र आती है। शासकों द्वारा उद्यानों का निर्माण सदैव कराया जाता रहा है– कभी यात्रियों के ठहरने के उद्देश्य से तो कभी निजी आमोद प्रमोद हेतु, तो कभी किसी प्रिय की स्मृति में। भारत के संदर्भ में पिछले ढाई हज़ार वर्षों के इतिहास की चर्चा करें तो बौद्धकाल में राजकुमार जैत की कथा से लेकर ब्रिटिश काल तक उद्यानों की सांस्कृतिक महत्ता सदैव बनी रही है। इसमें भी मध्यकाल पर विशेष दृष्टि डालें तो भारत के महानतम सम्राज्यों में गिने जाने वाले मुग़ल साम्राज्य की भूमिका सर्वप्रमुख रूप से दिखाई देती है। मुग़लों ने तीन शताब्दियों से अधिक समय तक भारतीय उपमहाद्वीप के एक विशाल भाग पर शासन किया और राजनीति के साथ–साथ कला–संस्कृति के क्षेत्र में भी अद्वितीय उत्कृष्टता को प्राप्त किया। मुग़ल बादशाहों, विशेष रूप से अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के समय स्थापत्य के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये गये। इनमें ही एक पक्ष "मुग़ल उद्यानों" का था जो कि बेहद वैज्ञानिक तरीके से ज्यामितीय गणनाओं व सौंदर्य पक्ष को ध्यान में रखते हुए निर्मित किये गए थे। मुग़लों ने दिल्ली, आगरा, कश्मीर, लाहौर समेत पूरे साम्राज्य में अनेक आलीशान बगीचों की स्थापना करवाई जिनमें से कई आजतक अपनी बेजोड़ तकनीक की गवाही देने के लिए हमारे सामने मौजूद हैं। मुग़लों द्वारा इन उद्यानों के निर्माण में जिन सिद्धांतों एवं तकनीकों का प्रयोग किया उन्हें ही संक्षेप में "चारबाग शैली" के नाम से जाना जाता है।

चारबाग़ को मूलत: धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित स्वर्ग की कल्पना से सम्बद्ध किया जाता है । इसे फ़ारसी भाषा के शब्द "पैरिदाइज़ा" जिसका अर्थ 'दीवारयुक्त बगीचा' होता है, से जोड़कर देखा जा सकता है। फलों से लदे वृक्षों, घनी झाड़ियों एवं पुष्पयुक्त पौधों वाला ज्यामितीय रूपरेखा में सुसज्जित एक बगीचा जो जलकतारों द्वारा चार वर्गाकार भागों में विभाजित हो जाता था।[1] बाइबिल में स्वर्ग की व्याख्या कुछ इस प्रकार की गई है कि "ईश्वर ने पूर्व दिशा में ईडन में एक बगीचा लगाया जिसमें विविध प्रकार के सुंदर पेड़–पौधों को स्थान दिया गया जो कि फलों से लदे हुए थे। बाग के बीचोबीच अच्छे–बुरे के वृक्ष एवं एक जीवन वृक्ष की स्थापना की गयी थी जहाँ ईडेन से बहकर एक नदी आती थी और फिर चार दिशाओं में अलग–अलग जलधाराओं के रूप में विभाजित

1. कार्नेल, विन्सेंट जे. (2007). *वॉइसेज ऑफ इस्लाम: वॉइसेज ऑफ आर्ट, ब्यूटी एंड साइंस,* पृ. 94-95 ।

हो जाती थी।"[2] क़ुरान में भी कुछ ऐसा ही वर्णन मिलता है कि "जहाँ धरती से फव्वारे फूटते हैं, जहाँ छायादार खूबसूरत पौधे कतारों में मौजूद होते हैं, जहाँ पेड़ों पर फल हमेशा पके हुए होते हैं और हर एक की पहुँच में होते हैं, जहाँ प्रवाहिकाएं सदैव जल, मदिरा, दुग्ध एवं शहद से भरी हुई होती हैं, जहाँ ऊँचे दरख़्तों के साये में तपिश से राहत मिलती है और फूलों के अनन्त सागर अपनी सुगन्ध से वायु को लगातार आनंदमयी बनाये रखते हैं, वह स्थान पवित्र 'ज़न्नत' है जो प्रत्येक आस्थावान योग्य व्यक्ति के लिये सदैव प्रतीक्षारत रहता है।"[3] सम्भवत: ऐसा ही कोई विवरण रहा होगा जिसने प्रथम मुग़ल बादशाह बाबर को 'बाग-ए-वफ़ा' जैसा उद्यान स्थापित करवाने के लिए प्रेरणा दी होगी। धार्मिक विवरणों से इतर अगर पुरातात्विक प्रमाणों की बात करें तो चारबाग़ के प्रारंभिक प्रमाण अखमनी साम्राज्य के सायरस महान के मक़बरे से प्राप्त होते हैं[4] जहाँ प्रांगण को जलधाराओं द्वारा विभाजित किये जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। सिकन्दर द्वारा इस मक़बरे को दो बार देखे जाने का जिक्र प्राप्त होता है। कालांतर में ईरान और भारत समेत पूरे पश्चिम व दक्षिण एशिया में ऐसे बागों का निर्माण शासकों द्वारा कराया गया।[5]

चारबाग़ की संरचना एवं स्थापत्य:

फ़ारसी परम्परा में बाग से आशय एक ऐसे स्थान से लगाया जाता था जो रेगिस्तान की गर्मी एवं तपिश से लोगों को राहत प्रदान करता था। शायद हिंदुस्तान की भयंकर गर्मी व शुष्क जलवायु ने ही बाबर को इस उपमहाद्वीप में स्वर्ग का अपना एक टुकड़ा स्थापित करवाने के लिये प्रोत्साहित किया होगा। मुग़ल साहित्य में बाबर के फलों के प्रति अगाध प्रेम तथा बगीचों के प्रति लगाव के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं तथा बाबर खुद अपनी आत्मकथा में यहाँ की जलवायु से असंतुष्टि प्रकट करता है।[6] उसने आगरा के आसपास अनेक बागों की स्थापना करवायी और भारत में चारबाग़ परम्परा का सूत्रपात किया जोकि आगे चलकर उसके उत्तराधिकारियों के समय निरन्तर समृद्ध होती चली गयी।

बगीचों का आकार सामान्यत: वर्ग अथवा आयत के रूप में होता था जो पुन: कई वर्गाकार क्यारीनुमा खण्डों में विभाजित हो जाता था। यह विभाजन नहरों के माध्यम से किया जाता था जो गुरुत्वीय दवाब के सिद्धांत पर पर प्रवाहित होती थीं।[7] उद्यान के बीचोबीच एक महल अथवा मुख्य इमारत का निर्माण किया जाता था। उद्यान को दीवारों से घेराबंद किया जाता था तथा इनपर सुंदर प्रवेशद्वारों का निर्माण भी किया जाता था। कुछ उद्यानों में तो चार-चार प्रवेशद्वार तक हुआ करते थे। बगीचों का सौंदर्य और भी बढ़ाने के लिये इसमें पेड़-पौधों को ज्यामितीय क्रम से लगाया जाता था जिससे पूरे बाग का दृश्य बेहद आकर्षक लगता था। बाग में लोगों के एकत्र होने और उत्सवों आदि के लिये पवेलियन बनाये जाते थे तथा कई बागों में तो महिलाओं के लिए अलग से हरम का निर्माण भी किया जाता था।

जल की समस्त व्यवस्था, विशेषत: नहरें, इस चारबाग़ शैली की सबसे प्रमुख विशेषता थी[8] क्योंकि इनका काम केवल उद्यान की शोभा बढ़ाना ही नहीं बल्कि गर्मी से राहत देने तथा तापमान को नियंत्रित रखने में योगदान देने का भी था। जल से टकराकर गुजरने वाली वायु परिवेश को वातानुकूलित बनाये रखती थी। नहरें एवं जलाशय सदैव जल से परिपूर्ण रहते थे। इनसे जल को उथले

---

2. डेविसन, रॉबर्ट (1973). *जेनेसिस 1-11* ,कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. हुदा, "*हैवेन इन द कुरान*", *लर्न रिलीजन्स*, 1 अक्टूबर 2018 ।

4 हॉबहाउस, पेनलोप(2004), *द गार्डेन्स ऑफ पर्शिया।*

5 बेगड़े, प्रभाकर(1978). *एनशिएंट एंड मेडिवल टाउन प्लानिंग इन इंडिया*, सागर प्रकाशन, पृ. 173 ।

6. *बाबरनामा, अनु. बेवरिज*, लुज़ाक़ एंड कं. (1922) ।

7. डिकी,जेम्स , *द मुग़ल गार्डन*, पृ. 128 ।

8. फातिमा, सदफ(2012). *वाटरवर्क्स इन मुग़ल गार्डेन्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*।

जलमार्गों में प्रवाहित किया जाता था जिनके साथ ही पैदल टहलने के लिए पथ बनाये जाते थे। इन बगीचों में फ़ारसी कनात प्रणाली को भी कई जगह अपनाया गया जो कि जल संरक्षण व जल की नियमित उपलब्धता बनाये रखने के लिए एक बेहतरीन तकनीक साबित हुई, विशेष रूप से कम वर्षा वाले भागों में इनकी महत्ता अधिक थी। इसमें भूमिगत नहर अथवा सुरंग के माध्यम से जल को किसी दूरस्थ स्रोत से उद्यान तक लाया जाता था।[9] जटिल गणनाओं और अद्वितीय स्थापत्य पर आधारित इस प्रणाली में केवल गुरुत्वाकर्षण के सहारे जल को मीलों दूर से लाकर एकत्रित किया जाता था।

नहरें जल को बहाकर एक जलाशय में ले जाती थीं जिसे 'हौज़' कहा जाता था। ये हौज़ कई तलों वाले फव्वारों से युक्त होते थे और जब जल की चादरें एक तल से दूसरे तल पर गिरती थीं तो मंत्रमुग्ध कर देने वाला नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न होता था। मुख्य पवेलियन का निर्माण अक्सर सबसे बड़े हौज़ के पास किया जाता था।

क़ुरान में वर्णित स्वर्ग का आठ मंजिल वाला बगीचा उद्यान निर्माण हेतु आदर्श के रूप में माना जाता था। ये आठ मंजिलें जीवन, मृत्यु व शाश्वतता को प्रदर्शित करती थीं। मुग़लों ने चारबागों का निर्माण मुख्यत: मक़बरों अथवा किलों के साथ करवाया। मक़बरों के साथ बाग के निर्माण के पीछे सम्भवत: अवधारणा यह थी कि अगर कभी मक़बरे में चिरनिद्रा में सोया हुआ व्यक्ति जागेगा तो वह निश्चित रूप से फूलों व पक्षियों के कलरव से परिपूर्ण उद्यान में भ्रमण करना पसंद करेगा और यह भी सम्भव है कि वह स्वादिष्ट फलों का भी आनंद लेना चाहेगा।

मुग़ल चारबाग़ शैली के प्रमुख उदाहरण:

मुग़लों के समय वैसे तो पूरे राज्य में ही उद्यानों की स्थापना होती रही किंतु कुछ विशेष महत्ता वाले स्थानों जैसे आगरा, दिल्ली, कश्मीर एवं लाहौर इत्यादि में कई यादगार बागों का निर्माण किया गया। इनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है–

आगरा: मुग़लों के लिए आगरा प्रारम्भ से ही एक महत्वपूर्ण नगर रहा है। पहले मुग़ल बादशाह बाबर ने अपनी राजधानी यहीं स्थापित की थी, बाद में कुछ दूरी पर अकबर द्वारा तथा कालांतर में शाहजहाँ द्वारा भी आगरा में राजधानी निर्मित की गयी। जिस समय बाबर आगरा पहुँचा था, वहाँ यमुना के अलावा कोई भी जल का मुख्य स्रोत मौजूद नहीं था अत: बाबर को बाग लगवाने के समय मजबूरन कुओं की खुदाई का काम भी करवाना पड़ा। आज बाबर के समय के अधिकांश बाग नष्ट हो चुके हैं या फिर अपना असली रूप खो चुके हैं। अब उनमें बाबर की चाह के अनुसार न तो साइप्रस* के पेड़ मिलते हैं और न ही मजबूत बारादरियों के दर्शन होते हैं। कई विद्वानों का मानना है कि अगरा में लगभग चवालीस उद्यान थे, हालाँकि एबा कोच जैसे इतिहासकार यह संख्या छब्बीस तक बताते हैं।[10] कई उद्यान नगर विस्तार की प्रक्रिया में भी नष्ट हो गए। सटीक संख्या चाहे जो भी रही हो पर ये आँकड़े इतना अनुमान तो दे ही देते हैं कि बाबर का बगीचों के प्रति समर्पण कितना गहरा था।

आगरा में स्थित **रामबाग** जिसे आराम बाग भी कहा जाता है को भारत में निर्मित प्रथम मुग़ल उद्यान माना जाता है। यह आदर्श बगीचे की क़ुरान वाली कल्पना को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया था, इसे आठ तलों(टेरेस) के साथ एक ढालदार भूमि पर निर्मित किया गया था तथा सबसे ऊँचे तल की ओर पवेलियन निर्मित किया गया था। वर्ष 1621 में नूरजहाँ, जिसे मुग़लों में सबसे बड़ा

9. खैराबादी, मसूद(1991). *ईरानियन सिटीज़: फार्मेशन एंड डेवलपमेंट*; यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस।

10. "आगरा अगेन इन ब्लूम",डब्ल्यूएमएफ.ओआरजी, वर्ल्ड मॉन्यूमेंट्स फण्ड (4 जनवरी 2019)।

* साइप्रस के वृक्षों को स्वर्ग उद्यान में की कल्पना में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि इनको अमरत्व से जोड़कर देखा जाता है।

उद्यानप्रेमी माना जाता था, ने इस बाग की मरम्मत एवं संशोधन का काम करवाया और इसे 'बाग-ए-नूर अफ़सान' का नाम प्रदान किया।[11]

इसे अपना वर्तमान नाम सम्भवत: मराठों से प्राप्त हुआ था। काबुल में दफनाये जाने से पूर्व बाबर का पार्थिव शरीर यहीं पर मौजूद था जिस कारण से इसे आराम बाग कहा जाता था, यही धीरे-धीरे रामबाग हो गया। रामबाग ने भविष्य के मुग़ल उद्यानों के लिये एक मार्गदर्शक का काम किया जिसके सहारे बाद में भव्य बागों का निर्माण किया गया।

आगरा में स्थित दूसरा बाबरकालीन उद्यान **महताब बाग** था जिसका निर्माण 1530 के आसपास यमुना के किनारे आज के ताजमहल प्रांगण की विपरीत दिशा में करवाया गया था।[12]

यह भी कहा जाता है कि बादशाह शाहजहाँ को यमुना के दूसरी ओर एक चन्द्राकर (चापाकार) भूमि दिखाई पड़ी जो घास से आच्छादित थी। यह जगह बादशाह को ताज का दीदार करने के लिहाज़ से मुफीद लगी। इस प्रकार यहाँ एक बाग स्थापित किया गया और चन्द्राकर होने व चाँदनी जैसी छटा का आनंद देने के कारण इसे महताब बाग कहा गया। इसमें खूबसूरत पलस्तरदार भ्रमणपथ, हवादार पवेलियन, जलाशय, फव्वारे और फल-फूलों से युक्त अनेक पेड़-पौधों को स्थापित किया गया।[13] माना जाता है कि यह उद्यान ताजमहल कॉम्प्लेक्स का ही भाग था। विदेशी यात्री ट्रेवेनियर ने कुछ काले पत्थरों को देखकर यह अनुमान लगा डाला कि शाहजहाँ चाहता था कि यमुना की दूसरी ओर एक काले ताजमहल का निर्माण किया जाये जो सफेद ताजमहल की जुड़वां इमारत हो। इस मिथक को बाद में ब्रिटिश पुरातत्वविद ए सी एल कार्लाइल ने और हवा दे दी जब उन्होंने यहाँ मिले एक जलाशय व फव्वारे को उस कल्पित ढाँचे का भाग समझ लिया।[14] हालाँकि ये मिथक बाद में ख़ारिज हो गए और ट्रेवेनियर ने जिसे काला संगमरमर समझ लिया था वह असल में सफेद संगमरमर निकला जो समय के साथ काला पड़ गया था जबकि वह जलाशय व फव्वारा असल में महताब बाग़ के थे। 1993 में यहाँ एक अष्टभुजाकार जलाशय एवं पच्चीस फव्वारों की खोज हुई जिसने मुग़ल उद्यान शैली में नए मानकों को शामिल किया।

महताब बाग के विपरीत ताजमहल प्रांगण स्थित है जो कि स्वयं एक खूबसूरत चारबाग़ है। यह उठे हुए खियाबानों(पैदल पथों) द्वारा चार मुख्य तथा फिर कुल सोलह वर्गाकार खण्डों में विभाजित है। इन खण्डों को फूलों की चादरों अर्थात पुष्पवाटिकाओं से आच्छादित किया जाता था। मुख्य मक़बरे एवं प्रवेशद्वार वाले मार्ग के बीच एक जलाशय का निर्माण किया गया था जो कि उत्तर- दक्षिण दिशा में कुछ इस प्रकार था कि इसके छिछले जल में ताजमहल की छाया स्पष्ट नज़र आती थी। इस जलाशय का नाम 'हौद-अल-कॉथर' रखा गया था जो कि क़ुरान से प्रेरित था।[15] इस उद्यान की खासियत यह है कि अन्य मुग़ल चारबागों की भाँति इसमें मुख्य इमारत केंद्र में नहीं है बल्कि बाग के अंतिम छोर पर स्थित है। महताब बाग की खोज के बाद यह अनुमान लगाया जाने लगा है कि सम्भवत: यमुना नदी इस उद्यान की योजना का एक अंग थी और स्वर्ग की कल्पित नदियों में से एक की भाँति शामिल की गई थी[16] और यह

---

11. *तुज़ुक-ए-जहाँगीरी*; अनु. रोजर्स, संपा. बेवरिज, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन (1909)।

12. अविजित, अंशुल(2012). *नर्सरी ऑफ हिस्ट्री: द एएसआई'ज एफर्ट्स टू रिस्टोर द ताजमहल्स फैबुलस मेडिवल गार्डेन बियरिंग फ्रूट, इंडिया टुडे वीकली मैगज़ीन।*

13. स्टुअर्ट,डेविड(2004). *क्लासिक गार्डेन प्लान्स*, फ्रांसिस लिंकन लि. ,पृ. 33 ।

14. अविजित, अंशुल(2012). *नर्सरी ऑफ हिस्ट्री: द एएसआई'ज एफर्ट्स टू रिस्टोर द ताजमहल्स फैबुलस मेडिवल गार्डेन बियरिंग फ्रूट, इंडिया टुडे वीकली मैगज़ीन।*

15. बीगले, वेन ई.(मार्च,1979).*"द मिथ ऑफ द ताजमहल एंड ए न्यू थ्योरी ऑफ इट्स सिम्बॉलिक मीनिंग"*, द आर्ट बुलेटिन।

16. राईट, कैरेन(जुलाई,2000). "*वर्क इन प्रोग्रेस*",डिस्कवर मैगज़ीन।

बाग व महताब बाग असल में एक साझी योजना का भाग थे जिनका वास्तुविद भी एक ही व्यक्ति अली मर्दान था।[17] दोनों को साथ देखा जाए तो एक सम्पूर्ण चारबाग़ की आकृति उभर कर आती है जिसमें मुख्य भवन भी केंद्र में दिखाई देने लगता है।

1628 में बनकर तैयार हुए **एत्मादुद्दौला के मक़बरे** का मुगलकालीन स्थापत्य में विशेष स्थान है। यह पूर्णत: संगमरमर से बनी पहली मुगल इमारत थी जिसका निर्माण नूरजहाँ के पिता मिर्ज़ा गियास बेग अथवा एतमादुद्दौला की स्मृति में करवाया गया था। यह मक़बरा भी एक चारबाग़ के बीचोबीच स्थित है जिसे पैदल पथों व जलवाहिकाओं द्वारा कई वर्गाकार खण्डों में विभाजित किया गया है। यमुना के तट पर स्थित इस बाग का प्रवेशद्वार पूर्व की ओर है जबकि शेष दिशाओं में इसे दीवार से घेरा गया है। उत्तरी व दक्षिणी छोरों के मध्य अलंकृत प्रवेश मार्ग व घासयुक्त भूखण्ड हैं जबकि पश्चिम में एक बहुमंजिला पवेलियन बनाया गया था जहाँ से यमुना का शानदार नज़ारा दिखाई पड़ता था। उद्यान में पुष्पवाटिकाओं को उठे चबूतरों पर जबकि बड़े पेड़ों को किनारे दीवारों के साथ लगाया गया था ताकि पूरे प्रांगण व मुख्य इमारत का खुला एवं भव्य दृश्य उभर कर आ सके।

आगरा के ही पास सिकन्दरा में महानतम मुग़ल बादशाह अकबर की कब्रगाह है जिसका निर्माण जहाँगीर द्वारा करवाया गया था जो कि 1613–14 के आसपास जाकर पूर्ण हो सका।[18] माना जाता है कि इसके लिये जगह का चयन स्वयं अकबर ने अपने जीवनकाल में ही कर लिया था। मक़बरा दीवार से घिरे एक चारबाग़ में स्थित था जिसको लाल बलुआ पत्थर से निर्मित सेतुपथों द्वारा वर्गाकार उपखण्डों में बाँटा गया था। इस उद्यान में भी व्यवस्थित जलप्रबंधन देखने को मिलता है।[19] कालांतर में हुए जाट आक्रमण के चलते इस स्थान को काफी क्षतिग्रस्त हो गया जिसे ब्रिटिशकाल में ही कुछ सही करने का प्रयास हो पाया।

कश्मीर: मुग़लों ने अपने सबसे शानदार उद्यानों का निर्माण कश्मीर की खूबसूरत वादियों के बीच में करवाया था। कश्मीर से जहाँगीर को विशेष प्रेम था। वह यहाँ की प्राकृतिक छटा पर मंत्रमुग्ध था और चित्रकला प्रेमी होने के कारण यह स्थान उसके लिए कल्पनालोक के समान हो जाता था। यहाँ के ज्यादातर बगीचों को जहाँगीर व उसकी पत्नी नूरजहाँ के ही संरक्षण में स्थापित किया गया था। गर्मियों में मैदान की तपिश से राहत पाने के उद्देश्य से यह मुग़लों की पसंदीदा जगह थी, इसी कारण से संख्या के लिहाज़ से कश्मीर में सबसे ज्यादा बगीचे स्थापित कराये गये।

जबरवान पर्वतमाला के निचले भाग में डल झील के पूर्वी तट पर स्थित **निशात बाग** का निर्माण वर्ष 1633 में आसफ ख़ाँ द्वारा करवाया गया था।[20] कश्मीर घाटी में मौजूद यह सबसे बड़ा मुग़ल उद्यान है। 'निशात बाग' का शाब्दिक अर्थ 'प्रसन्नता अथवा आनंद का उद्यान' होता है[21] जो वास्तव में इस बगीचे पर बिल्कुल सटीक बैठता है।

इस उद्यान में भी यद्यपि मूल भवना स्वर्ग की कल्पनायुक्त चारबाग़ की ही थी लेकिन उच्चावच को देखते हुए कई बदलाव भी किये गये, जैसे पर्वतीय ढाल के अनुरूप अक्षीय प्रवाह प्रणाली को अपना ली गयी जिसमें पर्वतों से नीचे की ओर आता था। इसी कारण से बाग़ का स्वरूप आयताकार हो गया।[22] इसमें कुल बारह तल/टेरेस बनाये गये थे जो कि 12 राशियों का प्रतीक थे। बाग़ में अनेक वृक्ष

17. एलेन, जॉन(1958). *द कैम्ब्रिज शॉर्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया(प्रथम संस्करण)।*

18. *तुज़ुक-ए-जहाँगीरी*, अनु. रोजर्स, संपा. बेवरिज, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन(1909), पृ.152।

19. ब्रिटिश लाइब्रेरी ऑनलाइन गैलेरी, *द गार्डेन ऐट अकबर्स टॉम्ब, सिकन्दरा।*

20. विंडलॉस,जो; सिंह,सरीना (2007).*इंडिया: श्रीनगर*, लोनली प्लैनेट, पृ.353-354।

21..एम . ऑफ्द . 168-169।

22. उपरोक्त।

थे जिनमें साइप्रस एवं चिनार प्रमुख थे। आज भी बग़ीचे के समीप मुगलकालीन कई इमारतें दिख जाती हैं जो कि शेष रह गयी हैं।[23] इसी उद्यान में ही मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय की पुत्री शाहजादी ज़ोहरा बेगम की कब्र भी मौजूद है।

कश्मीर स्थित दूसरा मुख्य उद्यान **शालीमार बाग** है जिसका इतिहास छठी शताब्दी तक जाता है। राजा प्रवरसेन द्वितीय ने यहाँ एक भवन का निर्माण करवाया था। कालांतर में जैनुलआब्दीन ने यहाँ एक तटबंध का निर्माण करवाया ।जहाँगीर ने उद्यान के निचले भाग (फरह बख़्श) तथा शाहजहाँ ने बाद में इसी में ऊपरी भाग (फ़ैज़ बख़्श) का निर्माण चारबाग़ शैली में करवाया जो कि ज़नाना के भाग के रूप में जाना गया। यहाँ काले संगमरमर की एक बारादरी भी बनवाई गयी। इस उद्यान में कुल पाँच टेरेस हैं, जिनमे से निचले तीन दीवान-ए-आम हेतु जबकि ऊपरी दो दीवान-ए-ख़ास एवं ज़नाना हेतु थे। कश्मीर का मुकुट माना जाने वाला शालीमार उद्यान वैसे तो चारबाग़ के मूल सिद्धांतों पर ही निर्मित था पर यहाँ भी पर्वतीय स्थिति के चलते अक्षीय प्रवाहतन्त्र अपनाया गया था।[24] इसी वजह से इसका आकार भी आयताकार ही था। केंद्रीय प्रवाहिका 'शाहनहर' इस पूरी जल प्रणाली की धुरी थी जो कि तीन सीढ़ीदार टेरेसों से होकर बहती थी। इन टेरेस पर फ़व्वारे तथा किनारे पंक्ति में चिनार व साइप्रस रोपित किये गये थे।

शालीमार बाग अपने 'चीनीखानों' के लिये भी जाना जाता है जो वास्तव में बगीचे के झरनों के पीछे तरफ निर्मित मेहराबदार झरोखे थे जिनको रात में तेल के दियों के जरिये रौशन किया जाता था। ऐसे में झरने के पानी के पीछे जलते दीपकों का संयोग एक अद्वितीय नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता था।[25]

यहाँ जहाँगीर के समय निर्मित काले पवेलियन के सबसे ऊपरी तल पर ही अमीर खुसरो द्वारा रचित पङ्क्तियाँ अंकित हैं जो कालांतर में कश्मीर की सुंदरता की द्योतक बन गयीं ("गर फ़िरदौस बर-रुए ज़मीं अस्त, हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त")।[26]

कश्मीर का **अचबल बाग** पहले से ही निर्मित एक उद्यान था जिसे नूरजहाँ ने 1620 ई. में पुनर्निर्मित करवाया और एक भव्य बगीचे में परिवर्तित कर दिया। बगीचे का मुख्य आकर्षण इसका झरना है जो एक जलाशय में बहकर गिरते हुए आकर्षक दृश्य उत्पन्न करता है। यह उद्यान एक विशेष जलस्रोत/चश्मे के लिये भी जाना जाता है जिसे बृंगी नामक एक स्थानीय नदी का पुनर्प्रकटीकरण माना जाता है जो कि वानी दिवलगाम नामक गाँव के पास पहाड़ी दरारों में कहीं विलुप्त हो जाती है।[27]

शाही मुगल उद्यानों में कश्मीर में सबसे छोटा **चश्मेशाही बाग** है। इसका निर्माण अली मर्दान ख़ाँ द्वारा 1632 ई. के लगभग एक प्राकृतिक चश्मे के पास कराया गया था।[28] इसमें तीन टेरेसों का निर्माण किया गया था जिनसे होकर बहता चश्मे का पानी सुन्दर दृश्य उत्पन्न करता है। पहली टेरेस पर एक दुमंजिली कश्मीरी झोपड़ी बनायी गयी थी जहाँ से इस चश्मे का उद्भव होता था। दूसरी टेरेस पर एक जलाशय था जिसके मध्य में एक फव्वारा लगा हुआ था। यहाँ से बहता हुआ जल एक रैम्प के जरिये तीसरे टेरेस पर जाता था जो असल मे एक पाँच फ़व्वारे वाला वर्गाकार जलाशय था और प्रवेशद्वार के सबसे समीप स्थित था।[29] [30]

---

23. प्लम्पटर, जॉर्ज(1993). *द वाटर गार्डेन,* पृ. 38-39।

24. *शालीमार गार्डन्स इन श्रीनगर,* आर्कनेट.ओआरजी (25 दिसम्बर 2009)।

25. *हिस्ट्री ऑफ शालीमार बाग़*(2009), सर्चकश्मीर.ओआरजी ।

26. कौसर, सज्जाद (2005). *मीनिंग ऑफ मुग़ल लैण्डस्केप,* पृ.1 ।

27. कौल, पंडित आनंद (1935). *आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स इन कश्मीर,* पृ.94।

28. मूर,चार्ल्स डब्ल्यू. ;मिशेल,विलियम जे. ;टर्नबुल, विलियम (1993). *द पोएटिक्स ऑफ गार्डेन,* एमआईटी प्रेस, पृ.167 ।

29. *आर्किटेक्चर ऑफ चश्मेशाही*(2012), आर्कनेट. ओआरजी।

30. *कश्मीर वर्सेज पर्शियन इंफ्लुएंस ऑन कश्मीरी आर्ट*(2012), ईरानिका ऑनलाइन।

इस उद्यान का निर्माण शाहजहाँ ने अपने बड़े बेटे दाराशिकोह के लिये करवाया था जहाँ वह ज्योतिष विज्ञान का अध्ययन किया करता था।[31]

चश्मेशाही के ही निकट श्रीनगर के पश्चिमी भाग में **परी महल** स्थित है जिसको दाराशिकोह के लिये एक पुस्तकालय एवं आवास के रूप में वर्ष 1650 में बनवाया गया था।[32] दारा यहाँ ज्योतिष एवं अंतरिक्ष विज्ञान का अध्ययन किया करता था। इस स्थान का उपयोग वेधशाला के रूप में भी किया जाता था। दारा की पत्नी नादिरा बेगम अथवा परी बेगम के नाम पर ही इसका नाम परी महल रखा गया था। उद्यान में 6 टेरेस तथा गुम्बदाकार छतों वाले दो पवेलियन बनाये गये थे। उद्यान में जल का प्रबन्ध एक समीपवर्ती जलस्रोत से पाइप के माध्यम से होता था।

वेरीनाग एक अष्टभुजाकार पवेलियन से घिरे जलाशय वाला जहाँगीरकालीन उद्यान था जो कि उस प्राकृतिक जलस्रोत के चारों ओर बनाया गया था जिसे झेलम नदी के उद्गम से सम्बद्ध किया जाता है। पवेलियन व जलाशय का निर्माण ईरानी कारीगरों द्वारा किया गया था। शाहजहाँ द्वारा इस पवेलियन से लगे चारबाग़ प्रकार के आयताकार उद्यान के बीचोबीच एवं चारों ओर नहरों का निर्माण करवाया गया, साथ ही सीढ़ियाँ भी बनवायी गयीं। तीन सौ गज लम्बाई वाली केंद्रीय नहर जो कि प्राकृतिक चश्मे से बने जलाशय से जल प्राप्त करती है, आगे जाकर बीहट नदी में मिल जाती है। उद्यान के पूर्व में गर्म व शीत स्नानगृह भी बनवाये गये थे। जहाँगीर को यह स्थान इतना प्रिय था कि उसने मरने के बाद यहीं पर दफनाये जाने की इच्छा व्यक्त की थी, हालांकि यह पूरी न हो सकी।[33] समकालीन स्रोतों में आइन-ए-अकबरी में वेरीनाग को अद्वितीय सुंदरता वाला एक ऐसा स्थान बताया गया है, जिसके जलस्रोत की गहराई का मापन करना लगभव असंभव है।[34] जहाँगीर भी अपनी आत्मकथा में विस्तार से लिखते हुए बताता है कि उसने इस स्थान की जाँच पड़ताल करवाने के बाद यहाँ पर निर्माण कार्य करने के आदेश दिये तथा एक ऐसे खूबसूरत स्थान का निर्माण करवाया कि पूरी दुनिया का भ्रमण करने वाले यात्री भी ऐसे किसी दूसरे स्थान की मिसाल न दे पायें।[35]

दिल्ली: दिल्ली पिछले एक हज़ार वर्षो में भारत का सबसे प्रमुख नगर रहा है। ऐसे में मुग़लों के समय भी इसकी महत्ता निरन्तर बढ़ती रही। यहाँ भी कई चारबागों की स्थापना मुग़ल बादशाहों अथवा उनके अधीनस्थों द्वारा करवायी गयी। हालाँकि दुर्भाग्यवश अब ज्यादातर उद्यान अपने वास्तविक स्वरूप को खो चुके हैं और खण्डहरों में तब्दील हो गये हैं। दिल्ली स्थित **हुमायूँ का मक़बरा** भव्य मुग़ल इमारतों की कड़ी में प्रथम माना जा सकता है जो आगे चलकर ताजमहल की रूपरेखा के लिये प्रेरणास्रोत भी बना। यह एक चारबाग के केंद्र में स्थित है। दक्षिण एशिया में इस प्रकार का इतने बड़े पैमाने पर बनाया गया यह पहला चारबाग़ शैली का बगीचा था जो कि लगभग तीस एकड़ भूमि में विस्तृत था। अत्यधिक ज्यामितीय गणना पर आधारित इस उद्यान को पैदलपथों(खियाबान) एवं दो परस्पर काटती केंद्रीय नहरों द्वारा चार प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है जो कि ज़न्नत की कल्पना में वर्णित चार नदियों जैसा दृश्य उत्पन्न करने का एक प्रयास था। ये चारों भाग पुन: कई उपखण्डों में विभाजित थे और इस प्रकार कुल वर्गाकार भागों की संख्या यहाँ छत्तीस हो जाती है। मुख्य जलवाहिका केन्द्र में स्थित मुख्य मक़बरे के नीचे से होकर इस प्रकार गुजरती थी कि मानो वहाँ अदृश्य

---

31. पराशर, परमानंद (2004). *कश्मीर द पैराडाइज ऑफ इंडिया,* पृ. 230 ।

32. अग्रवाल, एस. पी.(1995). *मॉडर्न हिस्ट्री ऑफ जम्मू एंड कश्मीर: एनशिएंट टाइम्स टू शिमला एग्रीमेंट,* पृ.10 ।

33. कौल, पंडित आनंद (1935). *आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स इन कश्मीर,* पृ.98 ।

34. फ़ज़ल, अबुल ,*आइन-ए-अकबरी* (अनु. जैरेट), ख.II, पृ.361, एशियाटिक सोसायटी बंगाल (1891) ।

35. *तुज़ुक-ए-जहाँगीरी,* अनु. रोजर्स, संपा. बेवरिज, पृ.92, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन (1909)।

हो गयी हो और पुन: मक़बरे के पीछे उसी पंक्ति में उद्भूत हो जाती थी।[36] यह क़ुरान में वर्णित कल्पना के बिल्कुल अनुरूप था। बाग़ तीन ओर से ईंट-पत्थर की दीवारों से घिरा था तथा चौथी दिशा में यमुना नदी प्रवाहित होती थी जो अब काफी दूर जा चुकी है।

केंद्रीय पैदल पथ दो द्वारों पर जाकर समाप्त होते थे जिनमें से मुख्य वाला दक्षिणी दीवार तथा दूसरा छोटा वाला पश्चिमी दीवार पर स्थित थे। दक्षिणी द्वार का उपयोग मुगल काल में किया जाता था जो कि अब बंद रहता है। पूर्वी दीवार पर एक बारादरी का निर्माण किया गया था जो कि असल में 12 दरवाजे वाला एक पवेलियन था, जिसमें ताजी हवा के सुचारू प्रवाह की दृष्टि से रूपरेखा बनाई गई थी। उत्तरी दीवार पर एक हमाम अर्थात स्नानगृह का निर्माण किया गया था।[37]

इसी कड़ी में **रौशनआरा बाग** का नाम उल्लेखनीय है जिसका निर्माण शाहजहाँ की पुत्री रौशनआरा द्वारा 1650ई. के आसपास करवाया गया था जहां उसे मृत्यु के बाद 1671 ई. में दफन भी किया गया। उद्यान में एक नहर का निर्माण किया गया था जो थोड़ी सी उठी हुई थी। इसके दोनों ओर पुष्पयुक्त पौधों की कतारें लगाई गई थी। कालांतर में यहां रौशनआरा कि स्मृति में एक संगमरमर के पवेलियन का निर्माण भी कराया गया। इसी के केंद्र में रौशनआरा की क़ब्र स्थित है।

दिल्ली में ही स्थित **तालकटोरा बाग** भी एक मुगलकालीन चारबाग़ शैली का उद्यान था। यह 'ताल' अर्थात एक जलाशय एवं 'कटोरा' अर्थात दिल्ली कटक के निचले भाग के चलते प्राकृतिक रूप से बनी कटोरे जैसी आकृति के कारण तालकटोरा कहलाता है।[38]यद्यपि जलाशय अब विलुप्त हो चुका है फिर भी बाग के उत्तरी पश्चिमी छोर पर एक लंबी दीवार एवं गुंबदाकार अष्टभुजाकार पवेलियन दोनों छोरों पर मौजूद है। यह उस समय सेतुबंध के रूप में काम करते थे और वर्षा का जल रोककर जलाशय की ओर लौटाते थे। इस स्थान का उपयोग मराठा सेना द्वारा दिल्ली के युद्ध (1736-37) में सेना का शिविर लगाने के लिए किया गया था।[39]

एक अन्य उद्यान दिल्ली में ही मुख्य राजधानी से कुछ दूरी पर जीटी रोड के समीप स्थित है शाहजहां की पत्नी अजीज़-उन-निशा द्वारा निर्मित कराया गया था, उसके नाम पर ही आजिज़ाबाद कहा जाता था। इसे ही दिल्ली का शालीमार बाग भी कहा जाता है। बहुत से विद्वान मानते हैं कि शाहजहाँ ने ही इसकी नींव रखी थी। इस स्थान का महत्व इस लिहाज से काफी अधिक है कि यही वह स्थान है जहां पर उत्तराधिकार युद्ध में विजयी हुए औरंगज़ेब ने 1658 ई. में खुद को बादशाह घोषित किया था।[40] इसमें एक शीश महल एवं पुष्पवाटिका का निर्माण कराया गया था जो कि एक जलाशय के साथ निर्मित थे।

दिल्ली में ही निर्मित **सफदरजंग के मकबरे** का उद्यान भी मुगल चारबाग शैली का ही एक उदाहरण है। यद्यपि इसका निर्माण मुगलों ने नहीं बल्कि अवध के नवाब शुजाउद्दौला द्वारा बादशाह से अनुमति माँगकर करवाया गया था। उद्यान की रूपरेखा वर्गाकार थी जो चार बड़े वर्गाकार भागों में पैदलपथों और जलाशयों के माध्यम से पुन: अनेक छोटे उपखण्डों में विभाजित था। यह आकृति में हुमायूँ के मकबरे से मिलता-जुलता हुआ माना जा सकता है, किंतु आकार में उससे काफी छोटा है। यहाँ स्थित मुख्य जलप्रवाहिका प्रवेश द्वार की तरफ जाती थी, जबकि बाकी तीनों प्रवाहिकायें पवेलियनों की ओर प्रवाहित होती थीं। बीच में स्थित मकबरा जिस चबूतरे पर निर्मित है उसकी लंबाई प्रत्येक दिशा में लगभग 50 मीटर थी।[41] दीवारें पत्थरों से बनायी गयी थीं तथा अंदर की ओर मेहराबदार ताकों से युक्त थीं। पूर्वी दिशा में एक खूबसूरत भव्य द्वार निर्मित किया गया था, जिससे जुड़े हुए कई कक्ष, एक मस्जिद तथा प्रांगण भी

---

36. मूर,चार्ल्स डब्ल्यू. ;मिशेल,विलियम जे. ;टर्नबुल, विलियम (2000). *द पोएटिक्स ऑफ गार्डेन*, एमआईटी प्रेस, पृ.17 ।

37. टर्नर, टॉम(2005). *गार्डेन हिस्ट्री:फिलॉसॉफी एंड डिजायन*, पृ.163 ।

38. *मुगल एरा लिंक टू स्वैंकी स्टेडियम इन हार्ट ऑफ कैपिटल*, हिंदुस्तान टाइम्स, 30 मार्च 2013 ।

39. छाबड़ा, जी.एस. , *एडवांस्ड स्टडी इन द हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया (खण्ड 1, 1707-1803)* ।

40. *द मुगल शालीमार गार्डेन्स नार्थ ऑफ देलही*, ब्रिटिश लाइब्रेरी ऑनलाइन गैलेरी, 26 मार्च 2009 ।

41. बत्रा, रवि(2012), *द स्प्लेंडर ऑफ लोदी रोड: माय ब्रश विद हेरिटेज*, टेरी प्रेस।

बनाए गए थे। शेष दिशाओं में पवेलियनों को स्थान दिया गया जिन्हें जंगली महल (पश्चिमी), मोती महल(उत्तरी) एवं बादशाह पसंद (दक्षिणी) कहा जाता था। नवाब का परिवार इन्हीं में निवास किया करता था।[42]

अन्य उद्यान: चारबाग़ शैली के कुछ अन्य मुग़ल बगीचों की चर्चा की जाए तो इसमें वर्तमान पाकिस्तान स्थित पंजाब के हसन अब्दाल में मौजूद **बाग़-ए-वाह** का जिक्र किया जा सकता है जो कि एक अकबरकालीन उद्यान था। अकबर के नवरत्नों में से एक राजा मानसिंह को इसके निर्माण का श्रेय दिया जाता है।[43] उसकी नियुक्ति 1581 से 1586 ई. मध्य इस क्षेत्र में बाह्य आक्रमण रोकने के उद्देश्य से की गयी थी। काबुल जाते समय मार्ग में जहाँगीर यहाँ पर 1607 ई. में ठहरा था। वह लिखता है कि 1016 हि. को वह बाबा हसनअब्दाल में रुका।[44]वहाँ से दो मील की दूरी पर उसको एक झरने का पता चला। आगे वह झरने के पानी और उससे निर्मित जलाशय में मछलियों के बारे में लिखता है। जहाँगीर वहाँ तीन दिन रुका और मछलियाँ भी पकड़ीं जिनको उनकी नाक में मोती लगाकर वापस पानी में वापस छोड़ दिया गया।[45] शाहजहाँ भी काबुल जाते वक़्त 1639 ई. में यहाँ रुका था और उसने उद्यान में इमारतों के पुनर्निर्माण का आदेश दिया। अहमद लाहौरी नामक प्रसिद्ध वास्तुविद ने इसकी रूपरेखा बनायी तथा चारबाग़ सिद्धांतों के अंतर्गत ही अगले दो वर्षों तक इसमें बाग, महलों व सरायों के निर्माण का कार्य होता रहा। लाहौरी ने यहाँ बारह सुंदर द्वारों का निर्माण करवाया तथा नहरों व झरनों की सुंदर व्यवस्था की। गर्म एवं ठण्डे जल वाले सुंदर स्नानगृह भी बनाये गये तथा उनकी अंदरूनी दीवारों को पलस्तर पर फूल-पत्तियों की आकृति से सुसज्जित किया गया।

लाहौर स्थित **शहादरा बाग़** चारबाग का एक शानदार उदाहरण है। इसकी स्थापना रावी नदी के तट पर की गयी थी। मुगलकाल में शहादरा को लाहौर का प्रवेशद्वार माना जाता था। यहाँ पर जहाँगीर के प्रसिद्ध मक़बरे के साथ-साथ अकबरी सराय, नूरजहाँ का मक़बरा, आसफ ख़ाँ का मक़बरा तथा कामरान की बारादरी जैसी इमारतें भी अलग-अलग समय पर निर्मित की गयीं। बगीचा स्वर्ग उद्यान की फ़ारसी कल्पना को आधार बनाता हुआ निर्मित है जहाँ दो आपस में काटती नहरें एवं पैदलपथों(खियाबान) के द्वारा सम्पूर्ण बाग को चार बड़े वर्गाकार खण्डों में विभाजित किया गया। इस चतुष्कोणीय उद्यान की लम्बाई प्रत्येक दिशा में लगभग पाँच सौ मीटर है।[46]

लाहौर में ही स्थित एक अन्य उद्यान **शालीमार बाग** जिसे कश्मीर स्थित शालीमार बाग से ही प्रेरित होकर माना जाता है, का निर्माण शाहजहाँ द्वारा 1641-42 ई. के आसपास करवाया गया था। ये वह दौर था जिस समय मुग़ल सौंदर्य की कल्पना, कलात्मक अभिव्यक्ति एवं भव्यता अपने चरम पर थे[47] और इस उद्यान में भी इसके दर्शन होते हैं। यह उद्यान ज़न्नत के बाग की उस मानवीय कल्पना को हक़ीक़त में उतारने का एक शानदार प्रयास था जिसमें मनुष्य सभी अन्य प्राकृतिक तत्वों के साथ सहिष्णुता के साथ निवास करते हों।[48]

तीन भागों में विभाजित इस बाग के सबसे दक्षिणी भाग में ऊपरी टेरेस निर्मित था जो हरम के लिये आरक्षित था। मध्य वाले भाग में निर्मित टेरेस बादशाह के लिये होता था जो कि एक संकरा आयताकार किंतु सबसे प्रमुख हिस्सा था जहाँ उद्यान का केंद्र

---

42. उपरोक्त।

43. शिमेल, एनमेरी (2004). *द एम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल्स: हिस्ट्री, आर्ट एंड कल्चर*, पृ.295 ।

44. *तुज़ुक-ए-जहाँगीरी*, अनु. रोजर्स, संपा. बेवरिज, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन (1909)।

45. उपरोक्त।

46. वुलमैन, जोशिम; वेस्कॉट, जेम्स एल.(1996) *मुगल गार्डेन्स:सोर्स, प्लेसेज, रिप्रेजेंटेशन एंड प्रोस्पेक्ट्स।*

47. *फोर्ट एंड शालीमार गार्डेन्स इन लाहौर*(2017), यूनेस्को।

48. रहमान, अब्दुल(2009). *"चेंजिंग कॉन्सेप्ट्स ऑफ गार्डेन डिजायन इन लाहौर फ्रॉम मुगल टू कंटेम्परेरी टाइम्स".गार्डेन हिस्ट्री,* पृ.205-217, □□□□□ ।

स्थित था। सबसे निचला वाला टेरेस जो उद्यान के प्रवेश द्वार से सम्बद्ध था, कभी-कभी आम जनता के लिये खोला जाता था।[49] प्रत्येक दो टेरेस के बीच ऊँचाई में लगभग पन्द्रह फ़ीट का अंतर होता था। पहले व तीसरे टेरेस वर्गाकार थे जिन्हें पैदलपथों के जरिये छोटे-छोटे कई वर्गाकार खण्डों में विभाजित किया गया था तथा इनमें फव्वारों को इस प्रकार से क्रम में सजाया गया था कि बाग का एक नयनाभिराम दृश्य उत्पन्न किया जा सके।[50] बीच वाले टेरेस में चौड़ी सुंदर सीढ़ियाँ बनायी गयी थीं जिनसे होकर जल प्रवाहित हुआ करता था और एक जलाशय में एकत्रित होता था। इस जलाशय के ठीक ऊपर एक पवेलियन बैठने के लिहाज से निर्मित किया गया था। उद्यान में सेव, खुबानी, चेरी, आम, पॉपलर, साइप्रस, अनार, पीच इत्यादि वृक्षों की अनेक कतारें रोपित की गयी थीं। वर्तमान में यह बगीचा यूनेस्को की विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल है।

आज के हरियाणा के पंचकुला के क्षेत्र में स्थित **पिंजौर बाग** को मुग़लकालीन उद्यानों की ही श्रेणी में शामिल किया जाता है। हिमालय के गिरिपदों में अवस्थित इस उद्यान को औरंगज़ेब के ग्रीष्म एकांतवास की दृष्टि से बनाया गया था।[51] श्रीनगर के शालीमार बाग की तर्ज़ पर बने इस बाग को सात टेरेसों के सहारे बनाया गया था जिनमें से पहला व सबसे ऊँचा टेरेस प्रवेशद्वार से जुड़ा था, साथ ही इस पर मुगल-राजपूत शैली में एक शीशमहल भी बनाया गया था[52] जो कि एक हवामहल से भी जुड़ा हुआ था। दूसरे टेरेस पर मेहराबदार द्वारों वाला एक रंगमहल निर्मित था। तीसरे टेरेस पर एक पुष्पयुक्त क्यारी थी जिसके साथ में साइप्रस वृक्षों की कतारें लगायी गयी थीं। अगले टेरस पर एक जलमहल था जिसमे एक वर्गाकार चबूतरे पर एक फव्वारा स्थापित था। अगले टेरेस में फव्वारों व वृक्षों का क्रम था तथा सबसे निचले टेरेस में एक तश्तरीनुमा खुला हवादार थियेटर निर्मित किया गया था।

उपरोक्त अध्ययन के उपरांत यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पूरे मुगल सम्राज्य में बागों की एक समृद्ध परम्परा विद्यमान थी। अन्य अनेक उद्यानों जैसे बाबर का काबुल निर्मित बाग हो या फिर ढाका में मोहम्मद आज़म द्वारा शुरू कराया गया लालबाग हो अथवा इलाहाबाद स्थित बदनसीब मुग़लों की क़ब्रगाह खुसरो बाग़ हो, सभी में उद्यान निर्माण की मुग़लिया शैली की झलक स्पष्टतया दिखायी पड़ती है। मुग़ल बगीचे न केवल स्थापत्यकला के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं बल्कि यह प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति मुग़लों के प्रेम का भी प्रकटीकरण करते हैं। इनका एक अन्य पहलू यह भी था इन उद्यानों के ही माध्यम से हिंदुस्तान में अनेक ऐसी प्रजातियों के पेड़-पौधों का आगमन हुआ जो पहले भारत में नहीं पाये जाते थे। अखमनी साम्राज्य के सायरस महान के मक़बरे से प्रारम्भ हुई यह चारबाग़ शैली जो पश्चिमी एशिया से होती हुई हिंदुस्तान आयी और मुग़लों के अधीन अपने सौंदर्य, भव्यता एवं ज्यामितीय कुशलता के चरम पर पहुँच गयी। अंत में अमीर खुसरो की ही उन प्रसिद्ध पंक्तियों को मुग़ल उद्यानों के बारे में दुहराकर बात समाप्त की जा सकती है जिनके अनुसार 'धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है', इन खूबसूरत बगीचों में।

सन्दर्भ सूची :

1. कार्नेल, विन्सेंट जे. (2007). *वॉइसेज ऑफ इस्लाम: वॉइसेज ऑफ आर्ट, ब्यूटी एंड साइंस ।*
2. डेविसन, रॉबर्ट (1973). *जेनेसिस* 1-11 ,कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. हुदा, "*हैवेन इन द क़ुरान*", *लर्न रिलीजन्स,* (1 अक्टूबर 2018)।
4. हॉबहाउस, पेनलोप(2004), द *गार्डेन्स ऑफ पर्शिया ।*
5. बेगड़े, प्रभाकर(1978). *एनशिएंट एंड मेडिवल टाउन प्लानिंग इन इंडिया,* सागर प्रकाशन।
6. *बाबरनामा, अनु. बेवरिज,* लुज़ाक़ एंड कं. (1922) ।

49. उपरोक्त।

50. शिमेल, एनमेरी (2004). *द एम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल्स: हिस्ट्री, आर्ट एंड कल्चर,* पृ.295 ।

51. अशर, कैथरीन बी, *आर्किटेक्चर ऑफ मुगल इंडिया, भाग 1, ख.4* ,पृ. 272 ।

52. हरियाणा संवाद पत्रिका, अक्टूबर 2018 ।

7. डिकी,जेम्स , द *मुग़ल गार्डन* ।

8. फातिमा, सदफ(2012). *वाटरवर्क्स इन मुग़ल गार्डेन्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*।

9. खैराबादी, मसूद(1991). *ईरानियन सिटीज: फार्मेशन एंड डेवलपमेंट*, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस।

10. आगरा अगेन इन ब्लूम",डब्ल्यूएमएफ.ओआरजी, वर्ल्ड मॉन्यूमेंट्स फण्ड (4 जनवरी 2019)।

11. *तुज़ुक-ए-जहाँगीरी*, अनु. रोजर्स, संपा. बेवरिज, रॉयल एशियाटिक सोसायटी लंदन (1909)।

12. अविजित, अंशुल(2012). *नर्सरी ऑफ हिस्ट्री: द एएसआई'ज एफर्ट्स टू रिस्टोर द*

ताजमहल्स फैबुलस मेडिवल गार्डेन बियरिंग फ्रूट, इंडिया टुडे वीकली मैगज़ीन।

13. स्टुअर्ट,डेविड(2004). *क्लासिक गार्डेन प्लान्स*, फ्रांसिस लिंकन लि.।

14. बीगले, वेन ई.(मार्च,1979)."द *मिथ ऑफ द ताजमहल एंड ए न्यू थ्योरी ऑफ इट्स*

सिम्बॉलिक मीनिंग", द आर्ट बुलेटिन।

15. राईट, कैरेन(जुलाई,2000). "*वर्क इन प्रोग्रेस*",डिस्कवर मैगज़ीन।

16. एलेन, जॉन(1958). द *कैम्ब्रिज शॉर्टर हिस्ट्री ऑफ इंडिया(प्रथम संस्करण)।*

17. द *गार्डेन ऐट अकबर्स टॉम्ब, सिकन्दरा* ,ब्रिटिश लाइब्रेरी ऑनलाइन गैलेरी।

18. विंडलॉस,जो; सिंह,सरीना (2007).*इंडिया.श्रीनगर*, लोनली प्लैनेट।

19. स्टुअर्ट,सी.एम.विलियर्स, *गार्डेन्स ऑफ द ग्रेट मुगल्स।*

20. प्लम्पटर, जॉर्ज(1993). द *वाटर गार्डेन* ।

21. *शालीमार गार्डन्स इन श्रीनगर*, आर्कनेट.ओआरजी (25 दिसम्बर 2009)।

22. *हिस्ट्री ऑफ शालीमार बाग*(2009), सर्चकश्मीर.ओआरजी ।

23. कौसर, सज्जाद (2005). *मीनिंग ऑफ मुग़ल लैण्डस्केप ।*

24. कौल, पंडित आनंद (1935). *आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स इन कश्मीर*, पृ.94।

25. मूर,चार्ल्स डब्ल्यू. ;मिशेल,विलियम जे. ; टर्नबुल, विलियम (1993). द *पोएटिक्स ऑफ गार्डेन*, एमआईटी प्रेस, पृ.167 ।

26. *आर्किटेक्चर ऑफ चश्मेशाही*(2012), आर्कनेट. ओआरजी।

27. *कश्मीर वर्सेज पर्शियन इंफ्लुएंस ऑन कश्मीरी आर्ट*(2012), ईरानिका ऑनलाइन।

28. अग्रवाल, एस. पी.(1995).*मॉडर्न हिस्ट्री ऑफ जम्मू एंड कश्मीर: एनशिएंट टाइम्स टू शिमला एग्रीमेंट*, पृ.10 ।

29. पराशर, परमानंद (2004). *कश्मीर द पैराडाइज ऑफ इंडिया*, पृ. 230 ।

30. फ़ज़ल, अबुल ,*आइन-ए-अकबरी* (अनु. जैरेट), ख.II, पृ.361, एशियाटिक सोसायटी बंगाल (1891) ।

31. टर्नर, टॉम(2005). *गार्डेन हिस्ट्री:फिलॉसॉफी एंड डिजायन*, पृ.163 ।

32. *मुग़ल एरा लिंक टू स्वैंकी स्टेडियम इन हार्ट ऑफ कैपिटल*, हिंदुस्तान टाइम्स, 30 मार्च 2013 ।

33. छाबड़ा, जी.एस. , *एडवांस्ड स्टडी इन द हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया (खण्ड 1, 1707-1803)।*

34. द *मुग़ल शालीमार गार्डेन्स नार्थ ऑफ देलही*, ब्रिटिश लाइब्रेरी ऑनलाइन गैलेरी।

35. बत्रा, रवि(2012), द *स्प्लेंडर ऑफ लोदी रोड: माय ब्रश विद हेरिटेज*, टेरी प्रेस।

36. शिमेल, एनमेरी (2004). द *एम्पायर ऑफ द ग्रेट मुगल्स: हिस्ट्री, आर्ट एंड कल्चर*, पृ.295।

37. वुलमैन, जोशिम; वेस्कॉट, जेम्स एल.(1996) *मुग़ल गार्डेन्स:सोर्स, प्लेसेज, रिप्रेजेंटेशन एंड प्रोस्पेक्ट्स।*

38. *फोर्ट एंड शालीमार गार्डेन्स इन लाहौर*(2017), यूनेस्को।

39. रहमान, अब्दुल(2009)."*चेंजिंग कॉन्सेप्ट्स ऑफ गार्डेन डिजायन इन लाहौर फ्रॉम मुग़ल टू कंटेम्परेरी टाइम्स*".*गार्डेन हिस्ट्री*, पृ.205-217, JSTOR ।

40. अशर, कैथरीन बी, *आर्किटेक्चर ऑफ मुगल इंडिया, भाग 1, ख.4* ,पृ. 272 ।

41. हरियाणा संवाद पत्रिका, अक्टूबर 2018 ।